अध्याय -09

अंतर्राष्ट्रीय व्यापार

अंतर्राष्ट्रीय व्यापार

- व्यापार
- व्यापार की आरंभिक अवस्था
- अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का इतिहास
- अंतर्राष्ट्रीय व्यापार की आवश्यकता क्यों है?
- अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के आधार
- अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के महत्वपूर्ण पक्ष
- व्यापार संतुलन
- अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के प्रकार
- मुक्त व्यापार
- डंपिंग
- विश्व व्यापार संगठन
- प्रादेशिक व्यापार समूह
- अंतर्राष्ट्रीय व्यापार से संबंधित मामले
- अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के प्रवेश द्वार
- पत्तन के प्रकार

© JCERT not to be republished

व्यापार

व्यापार

वस्तुओं और सेवाओं का क्रय - विक्रय ही वास्तव में व्यापार कहलाता है व्यापार के लिए दो पक्षों का होना अनिवार्य है जिनके बीच वस्तुओं अथवा सेवाओं के स्वामित्व का अंतरण हो सके।

सामान्य रूप से व्यापार दो स्तरों में सम्पादित किया जाता है - १. अंतर्राष्ट्रीय और २. राष्ट्रीय,

अंतर्राष्ट्रीय

विभिन्न राष्ट्रों के बीच राष्ट्रीय सीमाओं के आर पार वस्तुओं और सेवाओं के आदान-प्रदान को अंतर्राष्ट्रीय व्यापार कहते हैं

राष्ट्रीय

जब राष्ट्र की सीमाओं के भीतर वस्तुओं और सेवाओं के आदान-प्रदान हो तो उसे राष्ट्रीय व्यापार कहते हैं।

व्यापार की आरम्भिक अवस्था

व्यापार की आरम्भिक अवस्था

- आरंभिक समाज में व्यापार का स्वरूप 'विनिमय व्यवस्था' के रूप में था, जिसमे एक सामान के बदले दूसरा सामान दिया जाता था। विनिमय व्यवस्था का जीवंत उदाहरण हमें भारत के गुवाहाटी से 35 कि.मी. दूर जागिरोड के जॉन बील मेला में मिलता है जो हर वर्ष जनवरी लगता है।
- आगे चलकर व्यापार में मूल्यवान धातुओं, दुर्लभ वस्तुओं, कीमती धातुओं के सिक्कों, हुंडी, पत्र मुद्रा आदि का प्रयोग होने लगा।
- वर्तमान में व्यापार का माध्यम मुद्रा है। मुद्रा के आविष्कार ने विनिमय व्यवस्था की कठिनाइयों को दूर कर व्यापार को सरल और सुविधाजनक बना दिया।
- (सैलरी शब्द लैटिन भाषा के 'सेलेरिअम' से बना है जिसका अर्थ है नमक के द्वारा भुगतान)

अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का इतिहास

अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का इतिहास

- इस मार्ग के सहारे व्यापारी भारत, ईरान, मध्य एशिया के मध्यवर्ती स्थानों से चीन में बने रेशम, रोम की ऊन व बहुमूल्य वस्तुओं तथा अन्य अनेक महंगी वस्तुओं का परिवहन करते थे।
- प्राचीन समय में अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का स्पष्ट उदाहरण हमें रेशम मार्ग के रूप में मिलता है। यह मार्ग लगभग 6000 किलोमीटर लंबी थी और रोम को चीन से जोड़ती थी।
- 12वीं एवं तेरहवीं शताब्दी में समुद्री मार्गों के विकास के साथ हैं अंतरराष्ट्रीय व्यापार में वृद्धि हुई।
- औद्योगिक क्रांति के साथ ही प्राथमिक उत्पादों का आयात प्रारंभ हुआ एवं मूल्यपरक उत्पादों का निर्यात। इससे औद्योगिक देशों में आर्थिक उन्नति तीव्र होती गई वहीं मूल्यपरक उत्पादों को आयात करने वाले देश गरीब होते गए।
- 15 वीं सदी तक आते-आते यूरोपीय उपनिवेशवाद का प्रारंभ हुआ और एक नए व्यापार का शुरुआत हुआ जिसे दास व्यापार कहा गया। परंतु दास व्यापार मानवीय मूल्यों का हनन करता था जिस कारण 1792 में डेनमार्क ने 1807 में ग्रेट ब्रिटेन ने और 1808 में संयुक्त राज्य अमेरिका ने इसे पूर्ण रूप से प्रतिबंधित कर दिया।

© JCERT not to be republished

अंतर्राष्ट्रीय व्यापार की आवश्यकता क्यों है?

अंतर्राष्ट्रीय व्यापार की आवश्यकता क्यों है?

अलग-अलग देशों में उत्पादन के विभिन्न कारक जैसे पूंजी, प्रौद्योगिकी, कच्चे माल की उपलब्धता, सस्ते एवं कुशल श्रमिकों की उपलब्धता आदि में अंतर दिखाई देती है। जो स्थान विशेष को वस्तु विशेष के उत्पादन के लिए अनुकूल बनाता है, जिससे वे कम लागत पर वस्तुओं का उत्पादन कर पाते हैं।

विभिन्न देशों के बीच प्राकृतिक संसाधनों का असमान वितरण मिलता है जो अंतरराष्ट्रीय व्यापार को प्रोत्साहित करता है।

कुछ देशों ने कुछ विशिष्ट वस्तुओं एवं सेवाओं के उत्पादन में विशेषज्ञता हासिल कर ली है, जैसे स्विट्जरलैंड में निर्मित घड़ियां, भारत के पश्चिम बंगाल में निर्मित जूट उत्पाद। इनकी पूर्ति अन्य देशों को अंतरराष्ट्रीय व्यापार के जरिए ही की जा सकती है।

इस प्रकार अलग अलग देश कम कीमतों पर उपलब्ध वस्तुओं का आयात करने एवं बेहतर मूल्य प्राप्त करने हेतु वस्तुओं को निर्यात करने के लिए अंतरराष्ट्रीय व्यापार से जुड़े हुए होते हैं।

© JCERT not to be republished

अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के आधार

अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के आधार

राष्ट्रीय संसाधनों में भिन्नता :

विभिन्न राष्ट्रों में प्राकृतिक संसाधनों के वितरण में असमानता मिलती है।

- **भौगोलिक संरचना में भिन्नता:-** कृषि, पर्यटन और अन्य गतिविधियों को प्रोत्साहित करती है।
- **खनिज संसाधनों की उपलब्धता में भिन्नता:-** औद्योगिक विकास को आधार प्रदान करती है।
- **भौगोलिक संरचना में भिन्नता:-** कृषि, पर्यटन और अन्य गतिविधियों को प्रोत्साहित करती है।

जनसंख्या कारक :

देशों के बीच जनसंख्या का आकार, वितरण और विविधता उत्पादित वस्तुओं के प्रकार और मात्रा को प्रभावित करती है।

- **सांस्कृतिक कारक:-** कला और शिल्प के विशिष्ट रूप कुछ संस्कृतियों में विकसित होते हैं और व्यापार को जन्म देते हैं जैसे चीन के चीनी मिट्टी के बर्तन और ब्रोकेड, ईरान के कालीन, इंडोनेशिया के बाटिक कपडे, आदि।
- **जनसंख्या का आकार:-** घनी आबादी वाले क्षेत्रों में बाहरी व्यापार की तुलना में आंतरिक व्यापार बड़ी मात्रा होती है जो उत्पादित वस्तुओं के स्थानीय बाजारों में ही खपत हो जाने के कारण होता है।

आर्थिक विकास की प्रावस्था :

राष्ट्रों के आर्थिक विकास का स्तर, व्यापार की गई वस्तुओं के स्वभाव को प्रभावित करता है। आर्थिक रूप से पिछड़े देश प्राय: प्राथमिक उत्पादों का निर्यात करते हैं वही आर्थिक रूप से समृद्ध देश द्वितीयक उत्पादों का निर्यात करते हैं।

विदेशी निवेश :

विकासशील देशों में पूंजी की कमी होती है अतः विदेशी निवेश विकासशील देशों में व्यापार को बढ़ावा दे सकता है।

परिवहन :

प्राचीन समय में परिवहन सुविधाओं के अभाव ने व्यापार को स्थान विशेष पर केंद्रित कर रखा था सिर्फ बहुमूल्य वस्तुओं का ही व्यापार लंबी दूरी तक किया जाता था। परंतु आज परिवहन के विभिन्न साधनों के विकास ने व्यापार को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ला दिया है।

© JCERT not to be republished

अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के महत्वपूर्ण पक्ष

अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के महत्वपूर्ण पक्ष

व्यापार का परिमाण:-

व्यापार की गई वस्तुओं का वास्तविक तौल परिमाण कहलाता है । सभी प्रकार की व्यापारिक सेवाओं को तौला नहीं जा सकता। इसलिए व्यापार की गई वस्तुओं व सेवाओं के कुल मूल्य को व्यापार का परिमाण के रूप में जाना जाता है ।

व्यापार संयोजन

व्यापार संयोजन से अभिप्राय देशों द्वारा आयातित व निर्यातित वस्तुओं व सेवाओं के प्रकार में हुए परिवर्तन से हैं। पिछली शताब्दी के शुरुआत में, व्यापार में प्राथमिक उत्पादों की प्रधानता थी। बाद में, विनिर्मित वस्तुओं का व्यापार क्षेत्र में आधिपत्य रहा। वर्तमान समय में विश्व व्यापार का अधिकांश विनिर्माण क्षेत्र के आधिपत्य में है, फिर भी सेवा क्षेत्र की प्रधानता अब हमें विश्व व्यापार में परिलक्षित हो रही है।

व्यापार की दिशा

पहले विकासशील देश कीमती वस्तुओं तथा शिल्पकला की वस्तुओं आदि का निर्यात करते थे । 19 वीं शताब्दी में यूरोपीय देशों ने विनिर्माण वस्तुओं को अपने उपनिवेशों से खाद्य पदार्थ व कच्चे माल के बदले निर्यात करना शुरू कर दिया । वर्तमान में भारत, चीन आदि देशों ने विकसित देशों के साथ प्रतिस्पर्धा शुरु कर दी है ।

© JCERT not to be republished

व्यापार संतुलन

अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के महत्वपूर्ण पक्ष

दो या दो से अधिक देशों के मध्य निश्चित समय मे होने वाले आयात-निर्यात के अंतर को व्यापार संतुलन या व्यापार शेष कहते है। अर्थात किसी देश का व्यापार संतुलन वह संबंध है जो एक निश्चित समयावधि मे उसके आयातों तथा निर्यातों के मूल्यों के बीच पाया जाता है।

यह दो प्रकार का होता है

ऋणात्मक या प्रतिकूल व्यापार संतुलन

प्रतिकूल व्यापार संतुलन से आशय उस स्थिति से है जब निर्यातों की तुलना मे आयात अधिक हो। अर्थात, वस्तुओं के आयात के लिए किए गए भुगतान, वस्तुओं के निर्यात से प्राप्त राशि से अधिक हो।

धनात्मक या अनुकूल व्यापार संतुलन

अनुकूल व्यापार संतुलन से आशय उस स्थिति से है, जब आयातों की तुलना मे निर्यात अधिक हो। अर्थात, वस्तुओं के निर्यात से प्राप्त होने वाली राशि, वस्तुओं के आयात के लिए किए गए भुगतानो से अधिक हो।

अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के प्रकार

द्विपार्श्विक व्यापार — दो देशों द्वारा एक दूसरे के साथ किया जाने वाला व्यापार द्विपार्श्विक व्यापार कहलाता है। विभिन्न समझौता द्वारा आपस में निर्दिष्ट वस्तुओं के व्यापार के लिए सहमत होते हैं।

बहु पार्श्विक व्यापार — बहुत से देशों के साथ किया जाने वाला व्यापार बहु पार्श्विक व्यापार कहलाता है।

मुक्त व्यापार

जब दो देशों के मध्य व्यापारिक बाधाएं हटा दी जाती हैं, तो उसे मुक्त व्यापार या व्यापार उदारीकरण कहा जाता है । यह कार्य सीमा शुल्क घटाकर किया जाता है घरेलू उत्पादों एवं सेवाओं को अंतर्राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा मिलती है जिससे उत्पादन की गुणवत्ता में वृद्धि होती है और व्यापार में भी वृद्धि होती है वहीं कुछ प्रतिकूल प्रभाव भी पड़ते हैं जैसे, विकासशील देशों में समुचित विकास न हुए होने के कारण, विकसित देश अपने उत्पादों को उनके बाजारों में अधिक मात्रा में भेज देते हैं, जिससे विकासशील देशों की अर्थव्यवस्था प्रभावित होती है और उनके अपने उद्योग बंद होने लगते हैं ।

डंपिंग

जब कोई देश या फर्म अपने घरेलू बाजार में किसी उत्पाद की कीमत से कम कीमत पर उस उत्पाद का निर्यात करती है तो इसे डंपिंग कहा जाता है। इससे आयातित देश में उस उत्पाद की कीमत प्रभावित होती है और स्थानीय विनिर्माण उद्योगों को हानि पहुंचती है। इसलिए, सरकार द्वारा उत्पादों की डंपिंग और इसके द्वारा व्यापार पर पड़ने वाले प्रतिकूल प्रभाव से उत्पन्न स्थिति को सुधारने के लिए एंटी डंपिंग शुल्क लगाया जाता है।

विश्व व्यापार संगठन (WTO)

- प्रथम एवं द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान विभिन्न देशों ने अंतरराष्ट्रीय व्यापार में नियमन और नियंत्रण आदि विधियों का प्रयोग किया, जिससे अंतरराष्ट्रीय व्यापार पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा।
- विश्व व्यापार को गतिशील बनाने के उद्देश्य से उदारवादी व्यापार प्रणाली को अपनाए जाने पर बल दिया जाने लगा।
- आगे चलकर अंतरराष्ट्रीय व्यापार को सुगम बनाने, उच्च सीमा शुल्क और विभिन्न प्रकार की अन्य बाधाओं से मुक्त कराने के उद्देश्य से 30 अक्टूबर 1947 को जेनेवा (स्विट्जरलैंड) में एक सम्मेलन हुआ जिसमें भारत सहित 23 देशों ने **'व्यापार एवं शुल्क संबंधी सामान्य समझौता'** (GATT) पर हस्ताक्षर किया। जो जनवरी 1948 से लागू हुआ।
- **विश्व व्यापार संगठन (WTO)**, व्यापार और शुल्क संबंधी सामान्य समझौते (GATT) का ही नया रूप है, जिसकी स्थापना 15 अप्रैल 1995 को हुई थी और इसने 1 जनवरी 1995 से कार्य करना आरंभ किया। इसका मुख्यालय जिनेवा (स्विट्जरलैंड) में है।

© JCERT not to be republished

विश्व व्यापार संगठन के कार्य

- यह विश्वव्यापी व्यापार तंत्र के लिए नियमों को निश्चित करता है।
- सदस्य देशों के बीच विवादों का निपटारा करता है।
- व्यापार संबंधी मुद्दों पर विचार-विमर्श के लिए मंच प्रदान करता है।
- विश्व व्यापार वैश्विक आर्थिक नीति निर्माण में अधिक सामंजस्य लाने के लिए अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष एवं विश्व बैंक से सहयोग करता है।
- विश्व संसाधनों का अनुकूलतम प्रयोग को प्रोत्साहित करता है।

प्रादेशिक व्यापार समूह

- भौगोलिक समीपता, समरूपता और पूरकता के साथ देशों के बीच व्यापार को बढ़ाने एवं विकासशील देशों के व्यापार पर लगे प्रतिबंध को हटाने के उद्देश्य से प्रादेशिक व्यापार समूहों का विकास हुआ।
- इनके अस्तित्व में आने का एक और कारण वैश्विक संगठनों का इनके व्यापार को गति दे पाने में असफल होना भी था।
- आज 120 प्रादेशिक व्यापार समूह विश्व के 52% व्यापार का सृजन करते हैं।
- कुछ प्रमुख प्रादेशिक व्यापार समूह:-

© JCERT not to be republished

कुछ प्रमुख प्रादेशिक व्यापार समूह

प्रादेशिक समूह	मुख्यालय	सदस्य राष्ट्र	उत्पत्ति	वस्तुएँ	सहयोग के अन्य क्षेत्र
ASEAN आसियान	जकार्ता इंडोनेशिया	ब्रुनेई दारुस्सलाम, कंबोडिया, इंडोनेशिया, लाओस, मलेशिया म्यांमार, फिलीपींस, सिंगापुर, थाईलैंड और वियतनाम	अगस्त. 1967	कृषि उत्पाद, रबड़, ताड़ का तेल, चावल, नारियल, कॉफी, खनिज ताँबा, कोयला, निकिल और टंगस्टन, ऊर्जा पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस तथा सॉफ्टवेयर उत्पाद	आर्थिक वृद्धि को त्वरित करना, सांस्कृतिक विकास, शांति और प्रादेशिक स्थायित्व
सी.आई.एस.	मिंसक, बेलारूस	आर्मेनिया, अजरबैजान, बेलारूस, जॉर्जिया, कजाकिस्तान, किर्गिस्तान, मॉल्डोवा, रूस, ताजिकिस्तान, तुर्कमेनिस्तान, यूक्रेन और उज्बेकिस्तान		अशोधित तेल, प्राकृतिक गैस, सोना, कपास, एल्यूमिनियम रेशे,	अर्थव्यवस्था प्रतिरक्षा और विदेश नीति के मामलों पर समन्वय एवं सहयोग
ई.यू. यूरोपीय संघ	ब्रुसेल्स बेल्जियम	ऑस्ट्रिया, बेल्जियम, बुल्गारिया, ई.ई.सी. क्रोएशिया, साइप्रस, चेक गणराज्य डेनमार्क एस्टोनिया, 1957 फिनलैंड, फ्रांस, जर्मनी, ग्रीस, ई.यू. हंगरी, आयरलैंड, इटली, लाटविया, लिथुआनिया, लक्ज़मबर्ग, माल्टा, 1992 पोलैंड, पुर्तगाल, रोमानिया, स्लोवाकिया स्लोवेनिया, स्पेन, स्वीडन, नीदरलैंड और यूनाइटेड किंगडम	E.E.C.-मार्च, 1957 E.U. -फरवरी, 1992	कृषि उत्पाद, खनिज, रसायन, लकड़ी, कागज, परिवहन की गाड़ियां, ऑप्टिकल उपकरण, कलाकृतियाँ, पुरावस्तु	एकल मुद्रा के साथ एकल बाज़ार,
LAIA लैटिन अमेरिकन इंटीग्रेशन एसोसिएशन	मोंटेवीडियो, उरुग्वे	अर्जेंटीना, बोलीविया, ब्राज़ील, कोलंबिया, इक्वाडोर, मैक्सिको, पराग्वे, पेरू, उरुग्वे और वेनेजुएला	1960		
NAFTA नॉर्थ अमेरिकन फ्री ट्रेड एसोसिएशन		संयुक्त राज्य अमेरिका	1994	कृषि उत्पाद, मोटर गाड़ियां, स्वचालित पुर्जे, कंप्यूटर, वस्त्र	
ओपेक (आर्गेनाइजेशन ऑफ़ पैट्रोलियम एक्सपोर्टिंग कंट्रीज)	वियना	अल्जीरिया, इंडोनेशिया, इराक, ईरान, कुवैत, लीबिया, नाइजीरिया, कतर, सऊदी अरब, संयुक्त अरब अमीरात और वेनेजुएला	1949	अशोधित खनिज तेल	खनिज तेल की नीतियों का समन्वय एवं एकीकरण करना
साफ्टा (साउथ एशियन फ्री ट्रेड एग्रीमेंट)		बांग्लादेश, मालदीव भूटान, नेपाल, भारत. पाकिस्तान और श्रीलंका	2006		अंतर प्रादेशिक व्यापार के करों को घटाना

© JCERT not to be republished

अंतरराष्ट्रीय व्यापार से संबंधित मामले

- कभी-कभी अंतरराष्ट्रीय व्यापार किसी देश के लिए प्रतिकूल भी साबित हो सकता है।
- अंतरराष्ट्रीय व्यापार से उत्पन्न होने वाली समस्याओं में से कुछ अन्य देशों पर अत्यधिक निर्भरता, विकास के असमान स्तर, प्राकृतिक संसाधनों का अति शोषण आदि हैं।
- समय के साथ देश व्यापार हेतु प्रतिस्पर्धी बनते जाते हैं जिससे प्राकृतिक संसाधनों का अतिशय शोषण होने लगता है।
- आज विश्व को विकास की अंधी दौड़ ने कई पर्यावरणीय खतरों की ओर धकेल दिया है।

अंतरराष्ट्रीय व्यापार के प्रवेश द्वार

- अंतर्राष्ट्रीय व्यापार की दुनिया के मुख्य प्रवेश द्वार पोताश्रय तथा पतन होते हैं।
- इन्हीं पतन के द्वारा जहाजी मांग तथा यात्री विश्व के एक भाग से दूसरे भाग को जाते हैं।
- पतन जहाज के लिए गोदी लादने, उतारने तथा भंडारण हेतु सुविधा प्रदान करते हैं।
- एक पतन के महत्व को नवभार के आकार और निपटान किए गए जहाजों की संख्या द्वारा निश्चित किया जाता है।

© JCERT not to be republished

पत्तन के प्रकार

पत्तन के प्रकार

निपटाए गए नौभार के अनुसार पत्तन के प्रकार

- **औद्योगिक पत्तन**:– यह पत्तन थोक नौभार के लिए विशेषीकृत होते हैं जैसे अनाज, चीनी, अयस्क, तेल, रसासन आदि।
- **वाणिज्यिक पत्तन**:- यह पत्तन सामान्य नौभार संवेष्ठित उत्पादों तथा विनिर्मित वस्तुओं का निपटान करते हैं। यह पतन यात्री यातायात का भी प्रबंध करते हैं।
- **विस्तृत पत्तन**:- यह पत्तन बड़े परिमाण में सामान्य नौभार का थोक में प्रबंध करते हैं। संसार के अधिकांश महान पत्तन विस्तृत पत्तनों के रूप में वर्गीकृत किए गए हैं।

अवस्थिति के आधार पर पत्तनों के प्रकार

- **अंतर्देशीय पत्तन**:- यह पत्तन समुद्री तट से दूर अवस्थित होते हैं। यह समुद्र से एक नदी अथवा नहर द्वारा जुड़े होते हैं। जैसे कोलकाता, हुगली नदी, जो गंगा के एक सहायक है, पर स्थित है।
- **बाह्य पत्तन**:- यह गहरे जल के पत्तन है जो वास्तविक पत्तन से दूर बने होते हैं। यह उन जहाजों जो अपने बड़े आकार के कारण उन तक पहुंचने में अक्षम है को ग्रहण करके पैतृक पत्तनों को सेवा प्रदान करते हैं। उदाहरण स्वरूप एथेंस तथा यूनान में इसके बाह्य पतन पिरेअस एक उच्च कोटि का संयोजन है।

विशिष्टीकृत कार्यकलापों के आधार पर वनों के प्रकार

- **तेल पत्तन**:- यह पत्तन तेल के प्रक्रमण और नौ -परिवहन का कार्य करते हैं। इनमें से कुछ टैंकर पत्तन है तथा कुछ तेल शोधन पत्तन। वेनेजुएला में माराकाइबो, ट्यूनीशिया में एस्सखीरा, लेबनान में त्रिपोली टैंकर पत्तन है।
- **मार्ग पत्तन (विश्राम पत्तन)**:- समुद्री मार्ग पर विश्राम केन्द्र के रूप में विकसित हुए है। यहाँ पर जहाज ईंधन, जल एवं भोजन के लिए लंगर डालते हैं। जैसे — होनोलूलू एवं सिंगापुर।
- **आंत्रपों पत्तन** :- यह एकत्रण केंद्र होते हैं। इन पत्तनों पर विभिन्न देशों से निर्यात हेतु वस्तुएं लाई जाती हैं एकत्र की जाती हैं व अन्य देशों को भेज दी जाती हैं जैसे — यूरोप का रोटरडम एवं कोपेनहेगन।
- **पैकेट स्टेशन**:- इन्हें तेरी पत्तन के नाम से भी जाना जाता है। यह पैकेट स्टेशन विशेष रूप से छोटी दूरियों को तय करते हुए जलीय क्षेत्रों के आर पार डाक तथा यात्रियों के परिवहन (आवागमन) से जुड़े होते हैं। इंग्लिश चैनल के आरपार इंग्लैंड में डोबर तथा फ्रांस में कैलाइस पत्तन।
- **नौसेना पत्तन**:- यह केवल सामरिक महत्व के पत्तन है। ये पतन युद्ध के जहाजों को सेवाएं प्रदान करते हैं। कोच्चि तथा कारवाड़ भारत में ऐसे पत्तनों के उदाहरण है।

© JCERT not to be republished

अभ्यास

1. नीचे दिए गए चार विकल्पों में से सही उत्तर चुनें :

(i) संसार के अधिकांश महान पत्तन इस प्रकार वर्गीकृत किए गए हैं

(क) नौसेना पत्तन

(ख) विस्तृत पत्तन

(ग) तैल पत्तन

(घ) औद्योगिक पत्तन

(ii) निम्नलिखित महाद्वीपों में से किस एक से विश्व व्यापार का सर्वाधिक प्रवाह होता है ?

(क) एशिया

(ख) यूरोप

(ग) उत्तरी अमेरिका

(घ) अफ्रीका

(iii) दक्षिण अमरीकी राष्ट्रों में से कौन-सा एक ओपेक का सदस्य है?

(क) ब्राज़ील (ख) वेनेजुएला

(ग) चिली (घ) पेरू

(iv) निम्न व्यापार समूहों में से भारत किसका एक सह सदस्य है?

(क) साफ्टा (SAFTA)

(ख) आसियान (ASEAN)

(ग) ओइसीडी (OECD)

(घ) ओपेक (OPEC)

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 30 शब्दों में दीजिए :

(i) विश्व व्यापार संगठन के आधारभूत कार्य कौन-से हैं?

(ii) ऋणात्मक भुगतान संतुलन का होना किसी देश के लिए क्यों हानिकारक होता है?

(iii) व्यापारिक समूहों के निर्माण द्वारा राष्ट्रों को क्या लाभ प्राप्त होते हैं?

3. नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर 150 शब्दों से अधिक में न दें :

(i) पत्तन किस प्रकार व्यापार के लिए सहायक होते हैं? पत्तनों का वर्गीकरण उनकी अवस्थिति के आधार पर कीजिए।

(ii) अंतर्राष्ट्रीय व्यापार से देश कैसे लाभ प्राप्त करते हैं?

© NCERT not to be republished